16 सितंबर 2024 गोरखनाथ मंदिर ।कथा।

युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज की 55 वीं तथा राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज की 10 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर आयोजित साप्ताहिक श्रीमद्भागवत महापुराण कथा के तीसरे दिन श्री राममंदिर गुरुधाम वाराणसी से पधारे श्रीमद्जगतगुरु अनंतानंद द्वाराचार्य काशीपीठाधीश्वर स्वामी डॉ रामकमल दास वेदांती जी महाराज ने व्यास पीठ कहा कि किसी के गुण और दोष को देखना ही बंधन है और ममता रूपी धागे से लोग बंधे रहते इसीलिए उस तागे को भगवान के चरणों से बांध दो, तभी मोक्ष प्राप्त होगा क्योंकि जब हम अपना मन भगवान के चरणों में लगा देते हैं तो हम किसी के गुण दोष को देखना छोड़ देते हैं, केवल प्रभु चरणों में ध्यान लगाते हैं और सत्कर्म के मार्ग पर चलते हैं। महात्मा बंधन को खोलने का मार्ग बताता है वह तो बंधन से मुक्ति कराता है। ईश्वर हमें कभी बांधता नहीं है और संसार हमें नहीं पकड़ता, हम संसार को पकड़े हुए हैं। यह बंधन भ्रम का बंधन है वास्तव में कोई हमें बांधा नहीं है, हमे लगता है कि हम बंधे है। जिस दिन हमें ज्ञान हो जाएगा कि हम शरीर नहीं है हम आत्मा है तो हम कभी बंधन में नहीं रहेंगे क्योंकि बांधा तो शरीर को जाता है आत्मा को नहीं। हम भगवान के माया के बंधन में बंधे है। यदि हम चाहते हैं कि भगवान् को हम बांध लें तो हमें भक्ति योग को अपनाना होगा, क्योंकि भगवान् तो भक्तों के बस में होते हैं।

उन्होने कहा कि भक्ति केवल सत्संग से ही मिल सकती है इसलिए सत्संग करते रहना चाहिए। कथा कानों में औषधि का कार्य करती है वह सभी विकारों को दूर करती है। सत्संग से हम परम तत्व को जान जाते हैं और मन के सारे विकार दूर हो जाते हैं।

कथा व्यास ने आगे कहा कि बेटियों का सदैव आदर करना चाहिए, कभी भेद नहीं करना चाहिए कि वंश केवल बेटों से चलता है । श्रीमद्भागवत कथा में बताया गया है कि बेटे ही नहीं बेटियों से भी वंश चलता है।

राजा उत्तानपाद के दोनों पत्नियों सुनीति एवं सुरुचि की कथा का मर्म समझते हुए कथा व्यास कहते हैं कि हमारे जीवन में सुनीति एवं सुरुचि दोनों है। हमारे सामने दो रास्ते है सुनीति का रास्ता और सुरुचि का रास्ता। वेदों ,शास्त्रों के नीति के अनुसार जो रास्ता तय हो उस रास्ते को सुनीति का मार्ग कहते है और अपने 5 ज्ञानेंद्रियों एवं 5 कर्मेंद्रियों की रुचि के अनुसार जो मार्ग तय करते हैं उस मार्ग को सुरुचि का मार्ग कहा जाता है। इसीलिए अच्छा सुनो, अच्छा देखो, तभी

रुचि अच्छी होती है, नहीं तो सुरुचि का मार्ग हमारे लिए हानिकारक होता है। यही संदेश हमारे वेदों ने दिया है। जो लोग इंद्रियों को नीति के मार्ग पर चलाता है वही सुनीति का आचरण करता है, इसीलिए सुनीति से ध्रुव जैसा अटल रहने वाला पुत्र प्राप्त होता है और इंद्रीयो को स्वच्छंद छोड़कर जो रुचि के अनुसार उत्तम प्राप्त करता है, वह उत्तम तो लगता है परंतु अच्छा नहीं होता है क्योंकि वह अस्थाई होता है।

कथा व्यास ने कहा कि जिन लोगों के मन के विकार भगवान् के दर्शन के बाद भी नहीं जाते उनके विकार को समाप्त करने का एक ही उपाय है सत्संग । एक बार भगवान् को प्रसन्न करना बड़ी उपलब्धि नहीं है बल्कि हम हमेशा भगवान् को प्रसन्न रखें, यह बड़ी उपलब्धि है। इसके चार साधन हैं- पहला तितिक्षा अर्थात् सहनशीलता ,दूसरा करुणा, तीसरा सभी जीवों से मैत्री भाव रखना तथा चौथा सभी आत्माओं में समत्व का भाव रखना , इनसे भगवान सदैव प्रसन्न रहते हैं और हमारे पास रहते हैं।

उन्होने गाय की महिमा बताते हुए कहा कि गो सेवा से बढ़कर जीवन का बड़ा धर्म कोई नहीं है । राजा दिलीप ने नंदिनी नामक गाय की सेवा करके अपने साथ-साथ अपनी प्रजा का भी कल्याण किया। राजा का धर्म होता है कि वह अपने राज्य में समय-समय पर सत्संग का आयोजन कराते रहें, जिससे उनकी प्रजा सन्मार्ग का आचरण करती रहे। इसका पालन हमारे गोरक्षपीठाधीश्वर भी कराते रहे हैं। पूज्य योगी आदित्यनाथ जी भी प्रतिवर्ष यहां कथाएं और सत्संग कराकर गोरखपुर वासियों को पुण्य के भागी बनाते रहते हैं।

उन्होंने कहा कि पूजा-पाठ व किसी यज्ञ के नाम पर किसी निरीह पशु की बलि देना अनुचित है, इसका श्रीमद्भागवत पुराण कभी भी समर्थन नही करता, बल्कि इसमें इसकी घोर निन्दा की गयी है। सभी जीव भगवान के अंश हैं, वो किसी भी रूप में आ सकते हैं । उन्होंने बड़े ही भाव से "राहो पे नजर रखना होठों पे दुआ करना ,आ जाए प्रभु शायद दरवाजा खुला रखना" भजन गाकर श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया।

उन्होंने कहा कि आपका यदि अपनी इंद्रियों पर निग्रह है तो आप अपने घर में ही भगवान को प्राप्त कर सकते है, यदि इंद्रियों पर वश नहीं हैं तो तीर्थो में व वन मे जाकर तपस्या करने पर भी ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो सकती।

कथा का विश्राम आरती व प्रसाद वितरण से हुआ। संचालन डॉ॰ अरविन्द चतुर्वेदी ने किया। इस अवसर पर गोरखनाथ मंदिर के प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ जी, देवी पाटन तुलसीपुर के महंत योगी मिथलेशनाथ जी, वाराणसी से पधारे श्री संतोषदास सतुआ बाबा, कालीबाड़ी के महंत रविन्द्रदास, योगी धर्मेन्द्र नाथ, चचाईराम के महंत पंचानन पूरी, यजमान विधायक महेन्द्र पाल सिंह, अवधेश सिंह, संजय सिंह, अजय सिंह, महेश पोद्दार सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।